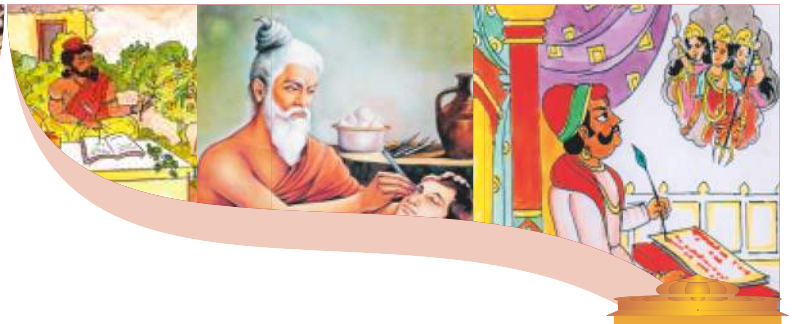

सामाजिक विज्ञान

भाग–III

इतिहास

अध्याय 17

मुगल साम्राज्य का पतन और 18वीं शताब्दी का भारत

अठारहवीं शताब्दी के पूर्व में ही मुगल साम्राज्य का पतन शुरू हो गया था। औरंगजेब की मृत्यु 1707 ई. में हुई। इससे पूर्व अधिकांश भारत पर उसका शासन था। परन्तु 1730 ई. तक मुगलों का प्रभाव केवल दिल्ली शहर और उसके आस–पास तक रह गया था। इलाहाबाद में हुई संधि में मुगल शासक शाह आलम द्वितीय ने अंग्रेजों के प्रभुत्व को मान लिया। इस साम्राज्य का पतन इतने कम समय में होगा, यह एक विचारणीय प्रसंग है।

मुगल साम्राज्य के पतन को समझने के दौरान कई तरह के सवाल उठते हैं। क्या औरंगजेब के उत्तराधिकारी योग्य नहीं थे, जिसके कारण व्यवस्था नहीं चली? क्या मुगल शासन व्यवस्था में कमी थी? जिसके कारण यह साम्राज्य टूट गया?क्या मुगल साम्राज्य में रहने वाले लोगों ने ही मुगल शासन का अंदर से विरोध करके उसे खोखला बना दिया था? क्या ईस्ट इंडिया कंपनी इतनी शक्तिशाली बन चुकी थी, उसकी सेना इतनी सुसज्जित एवं अनुशासित थी कि उन्होंने मुगलों को हरा दिया।

वैसे मुगल साम्राज्य का विघटन इसके पूर्व ही प्रारंभ हो गया था। औरंगजेब की धार्मिक, राजपूत, मराठा आदि नीतियों ने साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। उसकी मृत्यु के उपरांत पतन की गति तीव्र हो गई। मुगल साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित प्रमुख कारण थे–

पतन के मुख्य कारण

औरंगजेब की धार्मिक नीति

औरंगजेब की हिन्दू, सिख, शिया मुसलमानों आदि के प्रति अनुदार नीति के परिणाम बहुत घातक सिद्व हुए। इस नीति ने मुगल साम्राज्य को प्राप्त होने वाली हिन्दू शासकों की सहायता को कम कर दिया, जिसके बल पर पूर्व में मुगलों ने अपना साम्राज्य विस्तार किया था। इस नीति के कारण जाट, सतनामियों तथा सिखों ने भी मुगलों का विरोध किया तथा मराठों ने स्थानीय शक्तियों को संगठित कर विशाल साम्राज्य को स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। शिवाजी ने मराठों में राष्ट्रीय भावना इस प्रकार भरी थी कि औरंगजेब अपनी समस्त शक्ति लगा देने पर भी उन्हे दबा नहीं सका। मराठों से प्रेरणा लेकर उत्तर भारत के शासकों ने भी मुगलों का प्रतिरोध किया। पेशवाओं के समय में तो मराठों की शक्ति इतनी बढ गई थी कि उन्होने दिल्ली के मुगल बादशाह को अपने हाथ की कठपुतली बना दिया। मराठों की शक्ति के उद्भव को मुगलों के पतन का प्रमुख कारण माना जाता है। साथ ही आगरा तथा भरतपुर के इलाकों में जाटों ने मुगल सरकार को मानने से इंकार कर दिया। पंजाब में बंदा बहादुर के नेतृत्व में सिखों ने अपने आप को स्वतंत्र घोषित कर दिया। बंदा बहादुर ने तो अलग से सिक्का भी चलाया था। मुगल शासकों का इतना प्रभाव नहीं था कि इन विद्रोही शासकों को स्वतंत्र होने से रोक पाये।

मुगल शासकों की अयोग्यता

औरंगजेब के बाद के समस्त मुगल शासक निकम्मे और विलासी थे। उनकी अय्याशियों ने उन्हें अकर्मण्य बना दिया। इसी से उनकी वीरता एवं साहस में कमी आई। यह नैतिक पतन उनकी पराजय का कारण बना।

अमीरों (सरदारों) का पतन

शाही परिवार के सदस्यों के साथ–साथ उनके अमीरों का भी पतन हो गया था। वे विलासी जीवन व्यतीत करने लगे थे, और अपने स्वार्थ के लिए आपस में गुटबाजी कर लड़ने लगे थे। अमीर अयोग्य और चरित्रहीन हो गये थे । उन्हें अपने राज्य की किसी भी प्रकार की चिंता नहीं थी।

आर्थिक पतन

शाहजहाँ ने अपनी शान शौकत युक्त तथा खर्चीली इमारतों का निर्माण किया तथा औरंगजेब लम्बे समय तक युद्ध करता रहा, जिससे राज्य की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई थी। बाद के शासकों के विलासी होने तथा अहमदशाह अब्दाली एवं नादिर शाह की लूटों से मुगलों के खजाने खाली हो गए थे। साथ ही इस लूट के सामान के साथ बहुमूल्य हीरा कोहिनूर एवं तख्ते–ताऊस (मुगलों का मयूर सिंहासन) भी साथ लेकर गया। मुगल साम्राज्य की आर्थिक स्थिति ऐसी बिगड़ गई थी कि एक अवसर ऐसा आया कि मुगलों के शाही भोजन शाला में तीन दिनों तक चूल्हों में आग तक नहीं जली। जब शहजादियाँ भूख सहन न कर सकी तो उन्होंने पर्दा फेंककर बगावत कर दी। बड़ी कठिनाई से उन्हें अपने रनिवास में लौटने के लिये मनाना पड़ा। यह घटना 1755 ई. की हैं। मुगल साम्राज्य में व्याप्त अशांति एवं असुरक्षा के कारण व्यापार में गिरावट आई। इससे राजकीय आय पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ा। दस्तक प्रणाली से आय में कमी ने राज्य की आर्थिक दशा को और अधिक विकृत कर दिया। इसका ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों ने अनुचित ढंग से उपयोग शुरू किया, जिसने मुगल साम्राज्य को पतन की ओर धकेल दिया।

उत्तराधिकारी नियमों का अभाव

मुगल साम्राज्य में उत्तराधिकार के लिये नियमों का अभाव था। यहां कोई निश्चित नियम नहीं था कि शासक की मृत्यु के बाद उसका बड़ा पुत्र ही शासक बनेगा (गद्दी पर बैठेगा)। इसका निर्णय तलवार के बल पर होता था, इससे राज्य को बहुत हानि पहुँचती थी।

बाह्य आक्रमण

दुर्बल मुगल साम्राज्य के कारण विदेशी आक्रमणकारियों ने स्थिति का लाभ उठाया। अहमदशाह अब्दाली एवं नादिरशाह के आक्रमणों ने साम्राज्य को बहुत हानि पहुँचाई थी। इससे मुगलों की सैनिक शक्ति क्षीण हो गई थी। अवसर का लाभ उठाकर अनेक सूबों के सूबेदार स्वतंत्र हो गये थे।

राष्ट्रीयता का अभाव

मुगल काल में अधिकतर शासक राष्ट्रीय दृष्टिकोण के शासक नहीं हुए। उन्होंने विभिन्न पंथो को मानने वाले लोगों में एकता की भावना का संचार नहीं किया। औरंगजेब हिन्दुओं तथा शिया मुसलमानों से नफरत करता था। यह शासक अपनी प्रजा एवं सूबों के पदाधिकारियों में राष्ट्रीयता की भावना नहीं भर सका।

यूरोपीय जातियों का आगमन

मुगल काल में पुर्तगाली, अंग्रेज, फ्रांसीसी एवं डच समुद्र के मार्ग से भारत में व्यापार करने के लिए आए थे। उन्होंने धीरे–धीरे मुगल साम्राज्य की कमजोरियों का लाभ उठाना आरंभ किया। कुछ समय बाद अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों में, राजनीतिक सत्ता स्थापित करने के लिए संघर्ष हुआ। जिसमें अपनी सामुद्रिक

शक्ति के बल पर अंग्रेजों ने विजय प्राप्त की। अर्थात् मुगलों के पतन का अंतिम कारण अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी थी, जो भारत में व्यापार के लिए बनी थी। लेकिन अवसर पाकर उसने अपना साम्राज्य स्थापित किया।

गतिविधि–

परिचर्चा करें–मुगल साम्राज्य का पतन किन–किन कारणों से हुआ ?

18वीं सदी का भारत

दक्षिणी भारत में मराठा तथा उत्तरी भारत में सिख एवं जाट शक्ति से हुए संघर्ष ने मुगल साम्राज्य को कमजोर एवं विखण्डित कर दिया। 18 वीं सदी में भारत के विभिन्न भागों में प्रमुख राजनीतिक शक्तियाँ निम्नानुसार थी–

मराठा–मराठा साम्राज्य की स्थापना महाराष्ट्र में शिवाजी ने की थी। शिवाजी एवं उनके उत्तराधिकारियों ने औरंगजेब के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष किया। 18 वीं सदी के पूर्वार्द्ध में मराठा साम्राज्य में छत्रपति के स्थान पर पेशवा अधिक शक्तिशाली हो गए। पेशवा बाजीराव ने मराठा शक्ति का प्रसार भारत के अन्य प्रान्तों यथा मालवा, गुजरात, बुन्देलखण्ड आदि में कर दिया। बालाजी बाजीराव के समय में मराठों ने भारत के अधिकांश भागों पर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। 1752 ई. तक आते–आते मुगल सम्राट व वजीर भी मराठों के नियंत्रण में आ गए। 1761 ई. में पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठा शक्ति को आघात लगा, इसके बावजूद उस समय भारत की सबसे प्रबल शक्ति मराठा ही थे। अंग्रेजों ने मराठों के साथ तीन बार युद्ध करके उनको अपने अधीन कर लिया ।

जाट–मथुरा में जाटों ने गोकुल के नेतृत्व में औरंगजेब की धार्मिक नीतियों के विरोध में विद्रोह कर दिया। कालान्तर में बदन सिंह के नेतृत्व में जाट साम्राज्य की स्थापना हुई थी। जाटों की शक्ति का विकास महाराजा सूरजमल के नेतृत्व में हुआ। उन्होंने भरतपुर को अपनी राजधानी बनाया। जाटों ने मथुरा, अलीगढ़, दोआब क्षेत्र पर भी अधिकार कर लिया। भरतपुर के शासक रणजीत सिंह ने अंग्रेजों के विरूद्ध मराठा यशवंतराव होल्कर की सहायता की थी। बाद में भरतपुर के शासकों ने अंग्रेजों से संधि कर ली।

हैदराबाद–18 वीं सदी के पूर्वार्द्ध में मुगलों के मनसबदार निज़ाम चिनकिलिच खाँ ने दक्षिण के छह मुगल सूबों को मिलाकर हैदराबाद राज्य की स्थापना की। निज़ाम पर मुगल सत्ता का प्रभाव नाम मात्र का था। अब वह एक स्वतंत्र शासक बन गया था। उसके साम्राज्य विस्तार की योजना को मराठा पेशवा ने तोड़ दिया। मराठों ने उसे पालखेद के युद्ध में पराजित किया। पराजित होने के बावजूद भी हैदराबाद का निज़ाम शक्तिशाली था। बाद में हैदराबाद के निज़ाम ने अंग्रेजों से सहायक संधि कर ली थी।

अवध–अवध में मुगल सूबेदार सआदत खाँ ने स्वतन्त्र व्यवहार आरम्भ कर दिया। इसने नादिरशाह के आक्रमण के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कालान्तर में अवध का शासक शुजाउद्दौला बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों से हार गया तथा अवध पर भी अंग्रेजों का नियन्त्रण हो गया।

बंगाल–बंगाल राज्य की स्थापना मुर्शीद कुली खाँ ने की थी और बंगाल, बिहार व उड़ीसा के क्षेत्र

पर अपना अधिकार कायम कर लिया। उसके उत्तराधिकारियों के शासन काल में मराठों ने बंगाल से उड़ीसा को छीन लिया। 1757 ई. में हुए प्लासी के युद्ध में अंग्रेज सेनापति क्लाइव ने सिराजुद्दौला को पराजित कर बंगाल में अंग्रेजी साम्राज्य की नींव डाली।

मैसूर—मैसूर पर वाडियार वंश के राजाओं का राज्य था। 18वीं सदी के मध्य काल में उसके सेनापति हैदरअली ने उस पर अधिकार कर लिया। हैदरअली और उसके पुत्र टीपू सुल्तान का अंग्रेजों से निरन्तर संघर्ष हुआ। चार युद्धों के पश्चात् 18 वीं सदी के अन्तिम दशक में अंग्रेजों ने मैसूर पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

18वीं सदी में राजस्थान के राजपूत राज्य

उत्तरकालीन मुगल साम्राज्य की कमजोरी का लाभ उठाकर राजपूत शासकों ने भी अपना प्रभाव बढ़ाना आरम्भ किया किन्तु ये राज्य गृह युद्ध में उलझ गये एवं मराठों की विस्तारवादी नीति ने स्थिति को और बिगाड़ दिया।

आमेर (जयपुर)—18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में जयपुर के सवाई जयसिंह ने मालवा की सूबेदारी प्राप्त की थी। सवाई जयसिंह के द्वारा बून्दी के उत्तराधिकार युद्ध में हस्तक्षेप करने के कारण मराठों का राजस्थान में प्रवेश हुआ। मराठों के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए सवाई जयसिंह एवं अन्य शासकों ने 1734 ई. में राजपूत राजाओं का हुरडा नामक स्थान पर एक सम्मेलन बुलाया। उन्होंने हुरडा सम्मेलन के द्वारा राजपूतों की एकता का प्रयास किया था। जयसिंह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र ईश्वर सिंह व माधोसिंह में संघर्ष हुआ। बाद के सभी शासकों को मराठों के आक्रमण भी झेलने पड़े। जयपुर राज्य की अन्तिम प्रमुख सफलता सवाई प्रतापसिंह द्वारा तुंगा के युद्ध में मराठों को पराजित करना था।

जोधपुर—जोधपुर के अजीत सिंह ने जोधपुर को मुगलों से छीन लिया और उस पर अपना अधिकार कर लिया। बाद में मुगल दरबार में अपना प्रभाव बढाया व गुजरात का सूबेदार बना। मुगल सम्राट फर्रुखसियर को गद्दी से हटाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। इसके पश्चात् उत्तरवर्ती शासकों में राजगद्दी को लेकर गृह युद्ध हुए।

मेवाड़—मेवाड़ के शासक अमरसिंह द्वितीय ने जयसिंह को आमेर व अजीत सिंह को जोधपुर प्राप्त कराने में मदद की । कालान्तर में यह राज्य भी आपसी गृहयुद्ध में उलझ गया।

इस प्रकार 18वीं सदी में भारत में राजनीतिक अव्यवस्था व्याप्त हो गई। मुगल साम्राज्य कमजोर हो गया था। उसके स्थान को भरने की क्षमता मराठा शासकों में थी, किन्तु उन्होंने मात्र चौथ एवं सरदेशमुखी वसूल करने पर ही अपना ध्यान दिया। उन्होंने उत्तरी भारत के राजपूत राज्यों से अच्छे सम्बन्ध विकसित नहीं किए। परिणामस्वरूप पानीपत के तृतीय युद्ध में उन्हें अहमदशाह अब्दाली के विरूद्ध राजपूतों तथा अन्य भारतीयों की शक्तियों का सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। जिससे मराठों को इस युद्ध में पराजित होना पड़ा। राजपूत शासक भी अपने गृहयुद्धों के कारण अपनी शक्ति का विस्तार नहीं कर पाए। भारतीय शासकों की इस कमजोरी का लाभ अंग्रेजों ने उठाया और उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया।

18वीं सदी में समाज व संस्कृति

भारतीय समाज में हिन्दू व मुस्लिम निवास करते थे। इनमें समान रीति रिवाज प्रचलित थे। जातियाँ

व्यवसाय पर आधारित थी तथा समाज में दो वर्ग थे। अमीर वर्ग और जनसाधारण। भारतीय व्यवसाय उन्नत अवस्था में था। बंगाल एवं दक्षिण भारत के वस्त्र सम्पूर्ण दुनिया में प्रसिद्ध थे। भारतीय माल की माँग विदेशी बाजारों में भी बहुत अधिक थी, किन्तु 18 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में अंग्रेजी नीतियों ने भारतीय व्यापार को प्रभावित किया।

मुगल साम्राज्य के कमजोर होने से कलाकारों ने क्षेत्रीय राज्यों की ओर रुख किया । परिणामस्वरूप देश के विभिन्न हिस्सों में कला का विस्तार तीव्र गति से हुआ। कांगडा व राजपूत चित्रकला शैलियों में नई विशेषताएँ आईं। राजस्थान में इसी काल में जाट शासकों ने डीग के महल बनवाए। सवाई जयसिंह ने जयपुर शहर बसाया एवं भारत में पाँच स्थानों पर वेधशालाएँ (जन्तर–मन्तर) बनवाई। सवाई प्रतापसिंह ने जयपुर में हवामहल का निर्माण करवाया। प्रताप सिंह के दरबार में ही राधा–गोविन्द संगीत सार जैसा ग्रन्थ लिखा गया। इसके दरबार में 'गन्धर्व बाईसी' जैसे विद्वान् रहते थे। इसी काल में पंजाब में हीर–राँझा लिखा गया। भारत की अन्य भाषाओं में भी कई ग्रन्थों का निर्माण हुआ।

शब्दावली

दस्तक	–	आज्ञापत्र
चौथ	–	मराठों द्वारा अन्य शासकों से लिया जाने वाला सुरक्षा कर
सरदेशमुखी	–	मराठा क्षेत्र के शासकों से लिया जाने वाला कर

अभ्यास प्रश्न

1. मराठों में सर्वप्रथम राष्ट्रीय भावना को किस शासक ने भरा था?
2. यशवंतराव होल्कर की सहायता राजस्थान के किस शासक ने की थी?
3. गन्धर्व बाईसी किसके दरबार में रहते थे?
4. मुगलों में उत्तराधिकार किस प्रकार प्राप्त होता था?
5. 18 वीं सदी में मराठों की दशा का वर्णन कीजिए।
6. सवाई जयसिंह की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।
7. किन–किन मुगल सूबेदारों ने स्वतंत्र राज्यों की नींव डाली? किन्हीं तीन के नाम लिखिए।
8. हुरडा सम्मेलन कब आयोजित हुआ था एवं इसके उद्देश्य क्या थे?
9. मुगल साम्राज्य के पतन के किन्हीं चार कारणों का वर्णन कीजिए।
10. 18 वीं सदी में किन्हीं तीन राजपूत रियासतों की राजनैतिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

गतिविधियाँ–

1. 18 वीं सदी के प्रमुख नायकों के चित्रों का संकलन कीजिए।
2. भारत के मानचित्र में 18 वीं सदी के प्रमुख राज्यों को दर्शाइए।
3. विद्यार्थियों को राजा, सामन्त, सेनापति आदि बनाकर किसी प्रेरणादायी नाटक का मंचन करें।